(Learn from nature) सीखें हम इनसे भी

दादा लेखराज ने अपने लौकिक जीवन में 12 गुरु किये। सीखने की इसी प्रवृति ने उनमें अनेक गुण भरे। उनकी गुणों से प्यारी जीवन भगवान को भी प्यारी लगी और भगवान ने इस नर्कमय सृष्टि को स्वर्ग बनाने के लिए उन्हे अपना साकार माध्यम बनाया तथा नाम दिया प्रजापिता ब्रह्मा। इसी ब्रह्मा के द्वारा ईश्वर ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना की। यही अनोखा विश्व विद्यालय राजयोग की शिक्षा का मुख्य केन्द्र बना। यह हे जीवन में सदा सीखते रहने की भावना का प्रभाव।

शास्त्रों के अनुसार दत्तात्रेय ने 24 गुरु किये। उन्होने जिससे भी जो गुण प्राप्त किया उसे ही अपना गुरु स्वीकार कर लिया। प्रकृति हमें बहुत कुछ सिखाती है आओ सीखें हम इनसे भी-

जीवन को खुशियो से भर ले

अनहद फूल देख यहाँ

मन मेरा हर्षाया

बांटू खुशी मै भी ऐसे ही

प्रकृति ने पाठ पढ़ाया।

प्रकृति ने पाठ पढ़ाया

खुशियां बांटो जी भरकर

नहीं बांटोगे अगर खुशियां

मर जाओगे सिकुड़-सिकुड़ कर।।

संघर्ष की गाथा

बेरोजगार कहते नहीं बनता

देखी जब संघर्ष की गाथा

पत्थरो में उगा देख इन वृक्षो को

जज्बा मेरा भी जागा।

जज्बा मेरा भी जागा

कुछ कर दिखाऊ

सीट भले ही खाली न हो,

अपने लिए खुद सीट बनाऊँ।।

सीखें इन लताओ से

वृक्षो की इन चोटियो को

छूने को बेताब लताऐ

कर्म हीन पुरुषो को

अब कौन क्या समझाये।

अब कौन क्या समझाये

जिन्हे कुछ न करना हो

सीखें इन लताओ से

जिन्हें आगे बढ़ना हो।।

झुक गयी क्यों इतनी तुम

झुक गयी क्यों इतनी तुम

क्या तुम कुबडी बूढ़ी हो

या लदा बोझ तुम पर है इतना

जो झुकी हुई रहती हो।

बोझ नहीं फल है ये मेरे

नहीं किये अहम से फेरे

फल देना मुझे सुहाता

हर कोई मुझसे लेना चाहता।।

अगर मैं अकड़ खड़ी हो जाऊँ

फल इतना मैं न दे पाऊँ

आंधी आये टूट गिर जाऊँ

गिरी तो कैसे मुँह दिखाऊँ।

गिरे फल की शोभा घटती

फलो से लदी तो शोभा बढ़ती

मेरे फल हर कोई पाये

झुकी देख सब पास हैं आये।।

वरण अहम् का गर मुझसे होता

देने को कुछ भी न होता

अभागी डाली मैं कहलाती

दुनिया मुझसे दूर हो जाती।।

जहाँ गति है वहाँ प्रगति है

छल छल कर बहता जाये
नीर नदी में ये उज्जवल
मंजिल की तरफ बढ़ता जाये
नीर नदी में ये उज्जवल।
गति नीर की जो पहचाने
दुनिया उसका लोहा माने
बढ़ता जाये वह नीर की भाँति
थमता नहीं वह नदी की भाँति।
किनारो के बीच नदी ये बहती
छोड़ किनारे फिर भी बहती
बहाव में इसके जो भी आते
संग इसके वो भी हो जाते।
प्रगति की ये लिखती कहानी
बने बांध तो नहरे निकलती
बिजली तो जैसे मुफ्त में मिलती
इनका है गुणगान निराला।
प्रगति चाहो तो बहते जाओ
पास में जो वो देते जाओ
रच इतिहास पुण्य कमाओ
सरस्वति या गंगा कहलाओ।

समुद्र सम जीवन

समुद्र सम जीवन हो जिसका
उसके तो भई क्या कहने
वक्ष पर चलते जहाज है इसके
तले में अथाह रत्न और गहने
तले में अथाह रत्न और गहने
काम अगर ये आ जाये
समाये दुःख सभी के बन सागर
इन्सा भी भगवान कहलाये।
उछाले मारता ये सागर
कुछ अपनी भी कहना चाहता
आप आते पास हमारे
मैं भी मिलना चाहता।
मैं भी मिलना चाहता
कि कुछ दे जाऊँ
और नहीं तो, लहरों के
आलिगंन में तुम्हें समाऊ।
मिलन मेरा खारा लगता
पर है ये हितकारी
पानी की कमी के कारण
सारे जगत में मारा-मारी।

पर्वत मालाए आबू आंगन में

पर्वत मालाए आबू आंगन में

हम मिलजुल कर रहती

गर्मी सर्दी धूप हवा

सब कुछ हम है सहती।

सब कुछ हम है सहती

फिर भी नहीं सीखते तुम

एक आंगन में रहने वालो

फिर क्यों लड़ते तुम।

ऊँची चोटियां देख हमारी

ईष्या करने वालो

गगन से जैसे हम है मिलती

प्रभु मिलन मना लो।

प्रभु मिलन मना लो

यही साथ में जाना

चमक अपनी बढ़ाकर

तुम भी विजय माला में आना।

विजय माला के मणके ही

देव पद को पाते

ऐसे लोग ही धरती पर

प्रत्यक्ष स्वर्ग रचाते।।

जमी पे रहना सीखें

ब्रह्माण्ड में ये चमक धमक
और गहरा अंधियारा
सूरज अगर ना चमके
कभी न हो उजियारा।
कभी न हो उजियारा
तो क्या कुछ कर पाओगे
जीवन चक्र होगा समाप्त
सब सोये रह जाओगे।
सोये अगर रह जाओगे
तो क्या हवा जगायेगी
निकले जब सूरज
तभी ये काम आयेगी।
आकाश में उड़ान भरने वालो
जमी पे रहना सीखो
देवताओ सम पंच तत्वो को
दिल के स्नेह से सींचो।
दिल के स्नेह से सींचो
बडे काम ये आयेंगे
धरती को स्वर्ग बनाने का
संग बीडा उठायेंगे।।